Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 252-254 *Journal Website www.academejournal.in*

सन्त साहित्य और विश्व कल्याण

डॉ अजमेर सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर]अध्यक्ष हिन्दी विभाग, छोटूराम किसान महाविद्यालय, जीन्द हरियाणा

विश्व की महान हस्तियां काल प्रसूत होती है।

उनकी महानताएं उनकी वाणी के द्वारा युग युग तक जन-जीवन को जागृत करती रहती है तथा जाति देश और विश्व को प्रेरित करती रहती हैं। राजनैतिक अशांति, सामाजिक अव्यवस्था, धार्मिक ऊहापोह, आर्थिक विषमता, साहित्यिक अवमूल्यन तथा सांस्कृति पतन के इस युग में महान पुरुषों की आवश्यकता थी। इन सभी मानवीय विद्रूपताओं के प्रति सत्याचरण के विश्वासी, निडर, कर्मण्य, निर्भीक भारत के सन्तों ने अपनी सहज अनुभूति को स्पष्ट वाणी के रूप में अभिव्यक्त किया, जो अनायास ही जनमानस की हार बन गई। इन सन्तों के काव्य ने न केवल अपने युग को ही प्रभावित किया, अपितु आज के महान सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेता महात्मा गांधी तथा साहित्य द्रष्टा कवीन्द्र रवीन्द्र भी जीवन भर उनकी वाणी से विशेष रूप से प्रभावित रहें है।

"सत्याचरण के माध्यम से जो स्वतः ब्रह्म के सच्चे स्वरूप के प्रति निरन्तर उन्मुख रहता है, वही सन्त कहलाता है।"[1] इस दृष्टि से जब हम भारतीय आध्यात्मिक परम्परा पर प्रखर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि शंकर से लेकर कबीर, रैदास, धन्नाभगत, संत बेनी, संत दादूदयाल, शेख फरीद, मलूकदास, संत रज्जब जी, संत भीखा, संत चरनदास, संत सहजोबाई एवं दयाबाई तक सभी ने अपनी एक अहम भूमिका निभायी है। सच कहें तो रामकृष्ण परमंहस, विवेकानंद, महात्मा गांधी, श्री अरविंद तथा विनोबा भावे उसी परम्परा के आधुनिकतम फल है। इन संतो ने मानव को भक्ति और भक्ति को मानव में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। चूंकि संत का धर्म मानव धर्म होता है, उसकी साधना भी मानव धर्म की साधना होती है, जिसकों वह समाज में रहकर समाज के द्वारा समाज में शांति स्थापित करने में प्रयत्नशील रहता है।

"भिन्न भिन्न स्थितियों और जातियों में उत्पन्न ये संत कविगण उदात्त और उच्च भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि थे। उक्त संत कविगण भिक्षा नहीं मांगते थे। गृहस्थ होते हुए अपनी गृहस्थी के पालन-पोषण हेतु स्वयं तथा अपने पैतृक कार्य में संलग्न होकर काव्य-रचना करते है। इसलिए ये संत किसी व्यक्ति -विशेष, राजा महाराजा, बादशाह के अधीन नहीं थे। वे स्वावलम्बी थे। सत्य एवं खरी बात कहने में निर्भय निपुण थे। जाति-पांति, छुआछुत, ऊंच नीच आदि के प्रबल विरोधी संत कवियों ने जन-जन के मन में सहज और सरल भाषा में मानव धर्म और विश्व बन्धुत्व की भावना को जागृत किया। यद्यपि संत कवि पढ़े-लिखे नहीं थे तथापि उन्होंनें जीवंत काव्याभिव्यक्ति में नपी तुली बातें व्यक्त की हैं, जिनमें सरल और प्रभावोत्पादक काव्यतत्वों का समावेश है।"[2]

© Copyright @ Authors

समाज की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सभी प्रकार की समस्याओं का उन्होंने वैयक्तिक जीवन के माध्यम से, समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। **इन संतों ने समाज में सुव्यवस्था और व्यवहारिक जीवन में संतुलन और शांति लाने को ही प्रमुख ईकाई माना है।** संतों का मुख्य कार्य लोगों में उच्च गुणों के बीज डालना है जिससे वे सही काम के लिए अपनी जान जोखिम में डालने का प्रयास कर सके। धार्मिक आडम्बर और विषमतांए उनको तोड़ न पायी वे सदा इनसे जूझते रहे, भागे कभी नहीं और इसीलिए हारे भी कभी नहीं। सामाजिक कुरीतियों को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया और यथासम्भव उन पर भी कुठारागात किया। राजनीतिक अत्याचारों से जूझते-जूझते उन्होनें सिर तक कटा दिया, पर उसे झुकने नहीं दिया। आर्थिक द्ररिद्रता से अपने को उबारने के लिए कोई जीवन भर कपड़ा बुनता रहा, तो कोई जूतियां ही गांठता रहा।

संतों की **आध्यात्मिक साधना** में भी सत्य की साधना है। एक संत का संतोषी होना आवश्यक है। संत को ऐश्वर्यशाली जीवन जीने की मनाही है। गरीबी में रहकर ही मनुष्य या संत दीन जनों की सेवा करता है। "सच्चा संत अपनी सब चारित्रिक बुराईयों को दूर कर, उन गुणों को धारण करता है जो उसको सर्व दोष रहित ब्रह्म के समान निर्मल और स्वच्छ बना देता है।" [3] संत काव्य में प्रेम को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है। यह निश्छल प्रेम ही परमात्मा से मिलता है। परमात्मा परम पति है, तो साधक उसकी सच्ची प्रेमिका । "मनुष्य जाति से नहीं कर्म से महान बनता है। यह धारणा संतों की सारपूर्ण शक्ति है। जिस प्रकार की जातिय विषमता मध्यकाल में थी, कमोवेश आज भी ज्यों की त्यों समूचें राष्ट्र में परिव्याप्त है। ब्राह्मण जाति, सभी जातियों से सर्वोपरि तब भी थी और आज भी है।वह अपने को निम्न एवं अछूत माने जाने वाली जाति शूद्रों का अन्न जल ग्रहण नहीं करते। गांवों में इसका पुराना रूप अब भी सुरक्षित है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में आधुनिकता और मानवतावादी दृष्टि के तहत दुनिया के बदलते हुए चरित्र की गांव वालों को कोई जानकारी नहीं है विडम्बना देखिए उच्च जातियों के बर्तन भांडे, कुत्ते और बिल्लियों द्वारा छू जाने पर मान्य नहीं होते, किन्तु शूद्रों का स्पर्श होने पर उन्हें बेच दिया जाता है, आग में तपाकर शुद्ध किया जाता है कहना न होगा कि उनकी दृष्टि में मनुष्य का स्थान पशु से बदतर है। अतएव जातिगत विषमता के निवारण के सम्बन्ध में संतकवियों की रचनाए आज भी प्रासंगिक हैं।" [4]

किसी भी धर्म की **श्रेष्ठ बातों और सिद्धान्तों** को सन्त कवियों ने सहज रूप से स्वीकार किया है और नकारात्मक सोच का परित्याग करने को कहा है। उन्हें संकीर्णता, स्वार्थ तथा साम्प्रदायिकता कभी भी स्वीकार्य है। सन्त भावना किसी सम्प्रदाय विशेष में आबद्ध नहीं हुई, यह मानवीय धरातल पर विकसित हुई है। किसी भी धर्म, वर्ग या जाति का व्यक्ति इसे अनायास ही अपना सकता था और जब चाहे इसका त्याग भी कर सकता था। समाज के किसी भी वर्ग से आने वाले चरित्रवान व्यक्ति ने इसे हंसकर अपनाया, यदि नहीं भी अपनाया तो कम से कम विरोध नहीं किया। इनकी जीवन दृष्टि मूलतः

© Copyright @ Authors

मानवतावादी थी। इसलिए छिपी,दर्जी, नाई, जुलाहा, चमार और राजा सभी एक भक्ति सूत्र में पिरोय जाकर सन्त माला के जगमगाते माणिक बन गये।

वैज्ञानिक प्रगति और राजनैतिक अशान्ति के इस युग में आज राजनीतिज्ञों ने विश्व संसार की आवश्यकता अनुभव की है। यदि गहराई में जाकर मानव मानव को निकट लाने का यह प्रयत्न देखा जाए तो वह मानव धर्म और कुछ नहीं, इन संतों की मान्यताओं का ही विकसित एवं परिष्कृत रूप है। सन्तों की मान्यताओं का महत्व इसी से स्पष्ट है। "अतीत अपने वर्तमान में किसी न किसी रूप में हमेशा जीवित रहता है, कवि तब तक महान कहलाने का अधिकारी नहीं होता, जब तक उसकी दृष्टि अपने वर्तमान की सीमाओं को भेदकर भविष्य को न पढ़ लें। उनकी दृष्टि सार्वकालिक व सार्वभौमिक होती है। उनके विचारों का यह तत्व उन्हें सतत प्रांसगिक बनाए रखता है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहते है। संत कवियों की जनकल्याणी वाणियां तयुगीन समाज के सन्दर्भ में कही गयी थी, किन्तु उनकी महत्ता इस बात में है कि वे वर्तमान में भी अपनी प्रांसगिक सार्थकता की उर्जा से सरोबार है।"[5]

निसंकोच संसार का उद्धार करने वाले, मानव मानव को एकता का सन्देश देने वाले, जीवन में अलौकिक रस का संचार करने वाले, विश्व में शान्ति का प्रसार करने वाले सन्तों और उनकी मान्यताओं का यह संक्षिप्त लेखा-जोखा ही है। सचमुच में सतं वाणियां प्रदीप है, जिनके प्रकाश में मनुष्य का समस्त अज्ञान मिट जाता है।

संदर्भ –

1. सन्त काव्यः उद्गम स्त्रोत, विकास एवं मान्यताएं - डा० धर्मपाल सैनी, पृ04
2. मध्यकालीन हिन्दी संत काव्यः दर्शन और मूल्यांकन - डा० आदित्य प्रचाण्डिया पृ0166
3. हिन्दी भक्ति साहित्य में सामाजिक मूल्य व अवधारणाएं- डा० सावित्रि चन्द्र शोभा पृ0180
4. मध्यकालीन हिन्दी संत काव्यः दर्शन और मूल्यांकन - डा० आदित्य प्रचाण्डिया पृ० 217
5. मध्यकालीन हिन्दी संत काव्यः दर्शन और मूल्यांकन - डा० आदित्य प्रचाण्डिया पृ0288

© Copyright @ Authors